बहरीन। बहरीन के उप प्रधानमंत्री महामहिम शेख खालिद बिन अब्दुल्ला अल खलीफा के साथ आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं ब्र.कु.अरूणा।

नई सृष्टि का अग्रवाहक है 'वसंतोत्सव'

सर्दी के बाद आने वाली वसंत ऋतु का हमारे देश में बहुत महत्व है। वसंत माना ``सब दुःखों, परेशानियों का बस अंत, सदाबहार मौसम, पेड़ों पर नई कोपलों का फूटना, आमों पर बौर का छा जाना, प्रकृति में नई बहार का आना, खेतों में पीली सरसों का लहलहाना, कोई रोग, शोक का न होना, सभी का खुश रहना आदि। वसंत पंचमी

``गोल्डन दुनिया'' की निशानी है जहाँ चारो ओर खुशी, सुख-संपन्नता, खुशहाली आदि नज़र आएगी। वसंत में पीले रंग का अत्यधिक महत्व है और लोग पीले वस्त्र पहनकर माँ सरस्वती की पूजा करते व पीले चावल या खीर का प्रसाद खाते हैं। साथ ही पीला रंग प्रकाश, ऊर्जा, संपन्नता और आशावादिता का प्रतीक है। इस दिन पूरे भारत में स्वादिष्ट व्यंजन बनाने की परंपरा है। जैसे बंगाल में बूंदी के लड्डू और मीठा भात बनाया जाता है। वहीं बिहार में खीर, मालपुआ और बूंदी तथा पंजाब में मक्के की रोटी, सरसों का साग व मीठा चावल बनाया जाता है।

इस दिन को ``सरस्वती दिवस'' के तौर पर भी मनाया जाता है। सरस्वती देवी को ज्ञान, विवेक, सौम्य, शांतमयी प्रतिमूर्ति के रूप में देखा जाता है। मंदिरों आदि में अनेक धार्मिक कार्यों का आयोजन होता है तथा कुछ लोग ब्राह्मणों को भोज करापित तर्पण भी करते हैं। परंपरा के अनुसार बच्चे आज के दिन अपनी किताबें, कॉपी, पेन, पेंसिल आदि माँ सरस्वती के चरणों में रख देते हैं और किसी को भी उन्हें छूने की इज़ाजत नहीं होती क्योंकि ऐसी मान्यता है कि सरस्वती देवी इस दिन किताबों को वरदानों से भरपूर करती हैं।

क्या है वसंतोत्सव का आध्यात्मिक रहस्य?

आध्यात्मिक स्तर पर बसंत पंचमी का पर्व अज्ञान अंधकार से निकल उमंग-उत्साह, आनंद एवं ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर अग्रसर होने का संदेश देता है। परमपिता शिव स्वयं भारत में आकर यह आध्यात्मिक रहस्य बता रहे हैं कि कैसे यह सृष्टि झाड़ (कल्प वृक्ष) जड़जड़ीभूत हो गया है जो अब गिरने वाला है। परमात्मा ही आकर पुराने की जगह नया झाड़ लगाते हैं जो नयी दुनिया के आने की निशानी है। इस ऋतु में मौसम का बदलना भी नयी गोल्डन दुनिया की स्थापना का तीव्र संकेत है। वसंत पचमी के दिन से ही होलिका की आकृति का लकड़ी का गट्ठर इकट्ठा कर दिया जाता है जिसमें हर दिन और लकड़ियाँ लगाते हैं जो 40 दिन बाद होली वाले दिन जलाते हैं। जो विकारों रूपी बुराइयों, दुर्गुणों के भस्म होने का द्योतक है।

पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने देवी सरस्वती से खुश होकर उन्हें वरदान दिया था कि वसंत पंचमी के दिन तुम्हारी भी आराधना होगी। तभी से भारत के कुछ हिस्सों में सरस्वती वंदन-पूजन आरंभ हो गया। रिवाज़ के हिसाब से सरस्वती मंदिरों को एक दिन पहले से ही पवित्र चढ़ावे से भर दिया जाता है। मान्यता है कि माँ सरस्वती इस समारोह में सुबह से ही सम्मिलित होकर भोज ग्रहण करती हैं। और ज्ञान की देवी ज्ञान वीणा बजा अज्ञान अंधकार दूर कर मनुष्यों के ज्ञान चक्षु खोलती हैं। वेदों और पुराणों में सरस्वती को सफेद वस्त्र पहने, सफेद पुष्पों व मोतियों से अलंकृत , सफेद कमल पर (जो श्वेत जल में तैर रहा है) शोभायमान दिखाया जाता है। यह सफेद वस्तुएँ सम्पूर्ण पवित्रता व सच्चे ज्ञान की द्योतक हैं। सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति सूक्ष्म बुद्धि, पवित्र मन और दिव्य कर्त्तव्यों द्वारा ही होती है। यही संदेश वीणापाणी माँ बजाते हुए देती नज़र आती हैं। हंस को वीणावादिनी की सवारी के रूप में दिखाया जाता है जो दूध को पानी से अलग कर देता है अर्थात् अच्छाई को बुराई से प्रथक करने का गुण जानता है।

वसंत पर्व का ऐतिहासिक महत्व?

पुरानी मान्यता के अनुसार वसंत पर्व मनाने का आरंभ आर्यों के समय से हुआ जब वह खैबर पुल के रास्ते भारत आए और सरस्वती नदी के किनारे बस गए। आर्य संस्कृति का पूरा विकास क्योंकि सरस्वती के तट पर हुआ तथा खेती बाड़ी की सिंचाई सरस्वती के निर्मल जल से हुई इसलिए सरस्वती पूजन का प्रचलन यहीं से शुरू हो गया। ऐतिहासिक भारत में वसंतोत्सव या वसंत पर्व को काम देव, पत्नी रति, बसंत के साथ जोड़ कर मनाया जाता था। इसे श्रृंगार रस्म के तौर पर मनाते थे। इस दिन नाचने वाली लड़कियाँ, ढ़ोल वाले व अन्य लोग बक्शी महल जाकर राजसी परिवार के सदस्यों के साथ अनौपचारिक दरबार लगाते थे। पर्व पर नाचने वाली लड़कियाँ व राजकुमारियाँ विशेष किस्म के वासंती वस्त्र पहनती थीं। उत्सव वाले दिन नाचने वाली लड़कियाँ बक्शी महल के बगीचे से फूल एवं आम की पत्तियाँ तोड़ती थीं जो दरबार में पीतल के कलशों में सजाई जाती थीं। राजदरबार में नृत्य-संगीत की महफिल सजती थी और खास तौर पर प्रेम पर आधारित गोपी गीत तथा राधा कृष्ण संबंधी राग गाए जाते थे। उत्सव के अंत में फूलों पर गुलाल का छिड़काव किया जाता था जिसे नाचने वाली लड़कियाँ अपने गालों पर मलती थीं। फिर उन्हें राजघराने की महिलाएँ ईनाम देती थीं। आज भी कामदेव वसंतोत्सव के मुख्य आकर्षण बिन्दु हैं और उनके सम्मान

डेनपसर-इंडोनेशिया। इंडोनेशिया की भारतीय राजदूत श्रीमती नेंगचा ल्होवम तथा बाली के भारतीय राजदूत आर.ओ.सुनील बाबू से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु.जानकी एवं ब्र.कु.गीता।

फाजिल्का। बसंत पंचमी के अवसर पर बॉडर पर सेना के जवानों को राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण देने के पश्चात् समूह चित्र में डिप्युटी कमाण्डर नरेन्द्र सिंह, कमाण्डर तोमर जी, ब्र.कु.शालिनी तथा अन्य ।

फाजिलनगर। महावीर पी.जी. कॉलेज के विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने के पश्चात् ब्र.कु.भारती, ब्र.कु.सूरज, ब्र.कु.रामप्रसाद, ब्र.कु.उदयभान, डॉ.ज्योत्सना तथा डॉ.कृष्णचन्द्र समूह चित्र में।

हथीन-हरियाणा। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित शोभा यात्रा को रवाना करते हुए सरपंच संदीप जी, ब्र.कु.सुनीता, पूर्व सरपंच ब्र.कु.हरि सिंह, ब्र.कु.देवी सिंह, ब्र.कु.रोहताश तथा अन्य ब.कु. भाई-बहनें।

हाथरस। ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग द्वारा चलाये जा रहे `मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत' अभियान की जानकारी समाज कल्याण विभाग के प्रमुख सचिव सुनील कुमार को देते हुए ब्र.कु.शान्ता तथा ब्र.कु.हेमलता।

हनुमानगढ़-राज.। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित शिव अवतरण संदेश यात्रा में भाग लेते ब्र.कु. भाई बहनें।